पूर्व राष्ट्रपति कलाम और अन्य वीआईपी से संबंधों का प्रचार कर

लोगों को ठगने में लगा बाबा

पिछले बीस और इक्कीस मार्च को शहर में श्री कुमार स्वामी नाम के एक बाबा का भव्य कार्यक्रम हुआ जिसमें अनेकानेक लोग यह बता रहे थे कि बाबा द्वारा दिये गये 'बीजमंत्रों' के पाठ से उनकी कई असाध्य बीमारियां दूर हो गईं। इसके पूर्व बाबा के आगमन का तथाकथित राष्ट्रीय अख़बारों में पूरे पेज के विज्ञापन दे कर जोर-शोर से प्रचार किया जा रहा था। उन विज्ञापनों में वैसे लोगों के पत्र छापे गये जिन्हें 'बाबा के दिव्य मंत्रों' के पाठ से आसाध्य बीमारियों से मुक्ति मिली, शराब की लत छूटी, प्रेमियों को प्रेमिकायें मिलीं, सौतन से छुटकारा मिला, मनचाहा रोज़गार मिला, विदेश यात्रा का अवसरा मिला और दुनिया भर की समस्याओं से पलक झपकते सिर्फ़ मंत्रजाप से छुटकारा मिला। बार-बार ऐसे विज्ञापन प्रकाशित करवाने के बावजूद बाबा का मन नहीं भरा तो उसने 20-21 मार्च को होने वाले विराट 'प्रभु कृपा दुख निवारण समागम' के पूर्व एक राष्ट्रीय हिंदी दैनिक के माध्यम से अख़बार की साइज का दो पृष्ठीय विज्ञापन आर्ट पेपर पर अलग से छपवा कर लोगों की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश की। इस विज्ञापन में जहां आम लोगों से अपनी सफ़लता की सनद ली गई है, वहीं विख्यात लोगों द्वारा खुद को सम्मानित किये जाने का इश्तिहार भी छापा गया है। सारी समस्याओं के समाधान के लिए ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी के 230वें प्रभुकृपा दुख निवारण समागम में बाबा की चमत्कारिक शक्तियों से मिल कर अपनी समस्याओं का समाधान करवाने के लिए संपर्क साधने हेतु दो-दो मोबाइल फोन नंबर दिये गये थे। यही नहीं, दूसरे पेज में यह कहा गया था कि 'बुद्धिजीवियों ने सराहा बाबा के दैवीय पाठ का शास्त्रोक्त सत्य' और साथ ही पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के हाथों सम्मानित किये जाने की तस्वीर छापी है। इस तस्वीर के साथ ही देहरादून में आयोजित कार्यक्रम में उत्तराखंड के पूर्व राज्यपाल सुदर्शन अग्रवाल, पंचकूला में आयोजित कार्यक्रम में दिव्य पाठ का अनुभव सुनाते हुए केंद्रीय कार्यमंत्री पवन बंसल, अमृतसर में आयोजित कार्यक्रम में पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल, भाजपा के महामंत्री घोषित किये गये नवजोत सिंह सिद्धू आदि के मंच पर अवस्थित फ़ोटो, हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल द्वारा सम्मानित होते हुए फ़ोटो, इसी तरह लंदन समागम में, कनाडा समागम में, अमेरिका के समागम में बड़े-बड़े नेताओं द्वारा सम्मानित किये जाते हुए फ़ोटो और कुरुक्षेत्र के समागम में हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा द्वारा सम्मानित किये जाते हुए फ़ोटो छापे गये हैं।

इससे पता चलता है कि देश तो देश अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बाबा कुमार स्वामी का पाखंड तंत्र कितना फैला हुआ है। जो व्यक्ति इतने उच्च स्तर पर सम्मानित होता हो, आम आदमी के लिए निश्चय ही देव-स्वरूप होगा। 'महाजनो येन गत: सा पंथा।' इसका अनुकरण करते हुए 'गांठ के पूरे एवं अक्ल के अंधे' लोग़ बाबा का आशीर्वाद लेने और मंत्र पाठ कर मनचाही मनोकामना पूर्ण करने के लिए 'बीजमंत्र' लेने के लिए उमड़े। बाबा के कार्यक्रम का टीवी के कई चैनलों पर लाइव टेलीकास्ट किया गया।

बाबा ने जिस स्तर पर अपना प्रचार किया है, उसे देखते हुए लगता है कि वह बहुत पहुंचा हुआ खिलाड़ी है। आम बाबाओं के विज्ञापन तो अख़बारों में रोज ही छपा करते हैं और आम जनता अपनी समस्याओं के चमत्कारिक समाधान के लिए उनके पास पहुंचती रही है, पर यह बाबा कुमार स्वामी बहुत ही पहुंचा हुआ जान पड़ता है। तभी तो इसने सिर्फ़ विज्ञापनों पर ही लाखों रुपये खर्च कर डाले हैं। इस तरह की महंगी विज्ञापनबाजी यह पहले से ही करता आ रहा है और तंत्र-मंत्र की दुकानदारी चला कर इसने देश ही नहीं, विदेशों तक में अपना जाल फैला रखा है। इस दुकानदारी से इसने करोंड़ों-करोड़ रुपये कमाये हैं। इसने अपने चेलों का विराट नेटवर्क बना रखा है। यह बाबा धर्म के नाम पर बहुत बड़ी दुकानदारी चलाने में अव्वल है। विशेष कर समाज के उच्च एवं उच्च मध्यम वर्ग पर इसकी गहरी पकड़ है। इसने संपर्क करने के लिए मोबाइल फ़ोन के जो दो नंबर दिये हैं, उन पर संपर्क करने पर पहले पूछा जाता है कि आप क्या करते हैं। यह जानकारी इसलिए ली जाती है ताकि समझा जा सके कि फ़ोन करने वाले की हैसियत क्या है और बाबा को देने लायक इसके पास तगड़ी फ़ीस है या नहीं? फ़ोन बाबा का कोई कारिन्दा उठाता है, यह जानने के बाद कि फ़ोन करने वाला सामान्य श्रेणी का है, यह कह कर फ़ोन रख देता है कि बाबा के पास अब समय नहीं है। अगर आपने पहले फ़ोन किया होता तो स्वामी जी आपसे मिल कर 'आशीर्वाद' दे सकते थे। यह बाबा महिलाओं से मिलने में विशेष रुचि दिखाता है। यह कहने पर कि एक एनआरआई महिला मिलना चाहती है, बाबा के कारिंदों

वैसे राजनीतिक नेताओं ने ढोंगी-पाखंडी बाबाओं को आगे बढ़ाने का काम बहुत पहले ही शुरू कर दिया था। इंदिरा गांधी ने एक योगाचार्य स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी को अपने दरबार में पाल-पोस रखा था और देवराहा बाबा का चरण-रज लेने उनके पास आया-जाया करती थी। वहीं नरसिंह राव ने एक तांत्रिक चंद्रास्वामी को अपने दरबार में स्थान दे रखा था जिसके संबंध तस्करों और हथियार दलालों से तो थे ही, हॉलीवुड की प्रसिद्ध हस्तियों से भी थे। इसे देखते हुए इसी राह पर नेता और अफ़सरशाह चल रहे हों तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

ने उनसे मिलने का समय दे दिया। फ़ीस के संबंध में पूछे जाने पर कहा गया कि पहले मिल तो लें। यह पूछे जाने पर कि अगला समागम कहां होगा, न्यू यार्क और पेरिस का नाम लिया गया। कहा गया कि गर्मी का पूरा समय स्वामी जी विदेश में व्यतीत करेंगे। अगला समागम भारत में कब होगा, यह पूछे जाने पर तल्ख शब्दों में कहा गया कि इतनी ज्यादा और भावी कार्यक्रम की जानकारी फ़ोन पर नहीं दी जाती। आपको मिलना है तो समागम स्थल पर आ कर संपर्क करें।

कुल मिला कर यह साफ़ हो गया कि यह बहुत बड़ा पाखंडी बाबा है। यह बात और है कि उच्च वर्गीय समाज में इसकी पहुंच बहुत ऊंचे स्तर तक है। राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री और दूसरे बड़े लोगों से अपनी मेलजोल का प्रचार करने पर इसे उच्च वर्गीय समाज में ज़्यादा जगह मिलती है। ऐसी बात नहीं कि ये बड़े-बड़े नेता इसके पाखंड तंत्र को नहीं समझते, पर समझते हुए इसके पास इसलिए जाते हैं कि इस बाबा के पीछे जो लोग़ खड़े हैं, उनके वोट बैंक का लाभ भी उन्हें मिले। वे इतने मूर्ख नहीं कि बाबा के पाखंड को नहीं समझें, पर राजनीतिक लाभ के लिए बाबा का आशीर्वाद लेना जरूरी समझते हैं। सामान्य लोग़ भी बाबा को भक्ति-भाव के साथ दूर से ही प्रणाम कर कर कृत-कृत्य होते हैं, साथ ही अपने भाग्य को भी रोते हैं कि द्रव्याभाव होने के कारण वे स्वामी जी के दर्शन नहीं कर सके। यह कहने पर कि बाबा ढोंगी है,क्योंकि ब्लड कैंसर और अन्य रोग मंत्र जाप करने से ठीक नहीं हो सकते, लोग़ कहने लगते हैं कि क्या आप अब्दुल कलाम से भी बड़े वैज्ञानिक हैं जिन्होंने राष्ट्रपति रहने के दौरान बाबा को सम्मानित किया है। वे विज्ञापन को देख कर यह भी कहते हैं कि देश और दुनिया के बड़े-बड़े लोग़ बाबा का आशीर्वाद ले रहे हैं और उनहें सम्मानित कर रहे हैं, क्या आप उनसे भी बड़े हैं? अब्दुल कलाम वाला विज्ञापन अगर सत्य है तो यह आश्चर्य की बात है कि उनके जैसे व्यक्ति ने आखिर क्या सोच कर के इस बाबा को सम्मानित किया? क्या एक वैज्ञानिक होकर और देश के सर्वोच्च पद पर रहते हुए इस तरह के ढोंगी को सम्मानित किया जाना उचित था? क्या उन्होंने भी सामान्य तर्क बुद्धिवाद को ढोंग और पाखंड के सामने तिलांजलि दे दी? वैसे तो वर्तमान राष्ट्रपति भी आत्माओं से बात करती हैं और दिव्य ज्ञान रखती हैं। इनके पास दौड़ लगायें बाबा तो तो ये भी उन्हें सम्मानित करेंगी।

अगर किसी मंत्र जाप से ही कैंसर जैसी बीमारी ठीक हो जाती तो फ़िर डॉक्टरों, अस्पतालों और मेडिकल रिसर्च की क्या जरूरत रहती? इस पर लाखों-करोड़ों का खर्च क्यों किया जाता? क्यों न ऐसे ही ढोंगी-पाखंडी बाबओं को ही अपने सिर पर बैठा लिया जाता। सर्दी-जुकाम से लेकर कैंसर और एड्स जैसी बीमारियों को ये पलक झपकते दूर कर देते।

धन्य हैं इस देश के लोग़ और राजनेता। बिना कुछ सोचे-समझे, सामान्य समझदारी को भी ताक पर रख ऐसे बाबाओं के पीछे कतारबद्ध हो जाते हैं जिनका एक ही काम है लोगों की आंखों में धूल झोंक कर उनहें बेवकूफ बनाना और उनकी गांठ ढीली कर जम कर भोग-विलास करना।

अभी चंद दिनों पहले की ही बात है कि एक ओम् साईं राम का जाप करने वाले बाबा की कारगुजारियों का कच्चा चिट्ठा सामने आया कि किस तरह वह बड़े पैमाने पर देह व्यापार का रैकेट संचालित कर रहा था। यह बाबा अब पुलिस की गिरफ़्त में है, पर कहा जा रहा है कि उसके द्वारा काफ़ी लड़कियों को पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों के साथ ही नेताओं के पास भी भेजा जाता था। यही नहीं, उक्त बाबा के संबंध उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के दस्यु गिरोहों से भी थे।

यह घटना प्रकाश में आने के बाद सरकारी अफ़सरों एवं पुलिस को चाहिए था कि वह सभी बाबाओं और उनके गिरोहों की जांच-पड़ताल करे और उनकी ठग विद्या का शिकार होने से लोगों को बचाये। पर जहां पूर्व राष्ट्रपति से लेकर मुख्यमंत्री तक और कई विदेशी हस्तियों से उसके कथित संबंधों की बात सामने आ रही है तो उनके सामने अफ़सर और पुलिस अधिकारी कया चीज़ हैं? वे तो आगे बढ़ कर ऐसे बाबाओं की राह में कालीन बिछाने को तैयार रहेंगे। जहां तक सवाल मीडिया का है तो उसने अपने आप को बेच रखा है और बाबा हों या स्मगलर, साध्वियां हों या रंडिया, सबके धंधों को आगे बढ़ाने के लिए पलक-पांवड़े बिछाये रखते हैं।

वैसे राजनीतिक नेताओं ने ढोंगी-पाखंडी बाबाओं को आगे बढ़ाने का काम बहुत पहले ही शुरू कर दिया था। इंदिरा गांधी ने एक योगाचार्य स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी को अपने दरबार में पाल-पोस रखा था और देवराहा बाबा का चरण-रज लेने उनके पास आया-जाया करती थी। वहीं नरसिंह राव ने एक तांत्रिक चंद्रास्वामी को अपने दरबार में स्थान दे रखा था जिसके संबंध तस्करों और हथियार दलालों से तो थे ही, हॉलीवुड की प्रसिद्ध हस्तियों से भी थे। इसे देखते हुए इसी राह पर नेता और अफ़सरशाह चल रहे हों तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

बहरहाल, लोगों को इस तरह के पाखंडियों से दूर ही रहना चाहिए, क्योंकि उन्हें इसके भ्रमजाल में फंसने से कोई लाभ होने वाला नहीं है। उन्हें इससे नुकसान ही नुकसान होगा।

- प्रतिनिधि

राजनेताओं और ढोंगी बाबाओं का गठजोड़ : जनता को बरगलाने में सहायक

पूरी दुनिया में जनता को मुख्यतया दो सत्ताओं से नियंत्रित किया जाता है। एक राजसत्ता और दूसरी धर्मसत्ता। चिर काल में जब कभी राजा ने मात्र अपनी राजसत्ता द्वारा जनता को नियंत्रित करने में कठिनाई महसूस की तो उसने धर्म एवं भगवान का निर्माण किया तथा अपने आप को धरती पर भेजा गया भगवान का प्रतिनिधि घोषित कर दिया। यह इसलिए जरूरी था कि जो लोग़ राजा से अथवा राजसत्ता न डरते हों, विरोध एवं बगावत करते हों उन्हें भगवान अथवा धर्म का भय दिखा कर दबाया जा सके। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु राजाओं-बादशाहों के दरबारों में धर्माधिकारियों का विशेष स्थान रहा है।

राजसत्ता को बाबाओं का सबसे बड़ा एवं स्थाई सुख यह है कि ये लोग़ जनता को अपनी समस्याओं के लिए लड़ने व सरकार के खिलाफ़ भड़कने से रोके रहते हैं। ये बाबे लोग़ दुखी, पीड़ित एवं समस्याओं त्रस्त लोगों को सफ़लतापूर्वक यह समझाते हैं कि उन्हें कुछ करने की जरूरत नहीं है, न लड़ना है, न संघर्ष करना है, बस करना है तो केवल इतना कि उनका 'सत्संग' सुनना है, उन पर पूरा विश्वास करना है, उनके द्वारा बताये गये मंत्रों का जाप एवं टोने-टोटकों को करना है।

लगभग यही स्थिति आज के लोकतांत्रिक राजे-महाराजाओं और और उनके तथाकथित दरबारों की है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, दोनों का एक ही उद्देश्य जनता को मूर्ख बना कर अपने पीछे लगाना और उनका शोषण करना है। इसलिए दोनों एक दूसरे की सत्ता का अपने हित साधने के लिए इस्तेमाल करते हैं। बाबे यह दिखा कर जनता को आकर्षित करते हैं कि अमुक नेता उनके दरबार में हाजिरी लगाता है तो नेतागण चुनाव के समय यह दिखा कर वोट बटोरने का प्रयास करते हैं कि वे तो अमुक-अमुक बाबा के चेले हैं। ऐसे में जिस बाबा का जिस चुनाव क्षेत्र में जितना अधिक प्रभाव होगा, उस क्षेत्र में उस बाबा का उतना ही अधिक भाव होगा। इसके अलावा राजसत्ता को बाबाओं का सबसे बड़ा एवं स्थाई सुख यह है कि ये लोग़ जनता को अपनी समस्याओं के लिए लड़ने व सरकार के खिलाफ़ भड़कने से रोके रहते हैं। ये बाबे लोग़ दुखी, पीड़ित एवं समस्याओं त्रस्त लोगों को सफ़लतापूर्वक यह समझाते हैं कि उन्हें कुछ करने की जरूरत नहीं है, न लड़ना है, न संघर्ष करना है, बस करना है तो केवल इतना कि उनका 'सत्संग' सुनना है, उन पर पूरा विश्वास करना है, उनके द्वारा बताये गये मंत्रों का जाप एवं टोने-टोटकों को करना है। ये बाबे विभिन्न तरीकों एवं गवाहियों से जनता को समझाते हैं कि उनके बताये रास्ते पर चलने से भयंकर से भयंकर बीमारी ठीक हो जाती है, बेरोज़गारों को रोज़गार मिल जाता है, अनपढ़-अज्ञानी को ज्ञान और विद्या स्वत: प्राप्त हो जाती है, आदि-आदि। यानी कुल मिला कर ऐसी कोई समस्या नहीं बचती जो उनके बताये रास्ते से हल न होती हो। शायद यही कारण है कि देश में ज्यों-ज्यों महंगाई, बेराज़गारी और ग़रीबी की समस्या बढ़ रही है, त्यों-त्यों इन बाबों की दुकानों पर भीड़ बढ़ती जाती है। प्राइवेट स्कूलों व अस्पतालों में फ़ीस देने की क्षमता नहीं, सरकारी स्कूलों व अस्पतालों में पढ़ाने व इलाज करने वाले नहीं, पूरी सरकारी मशीनरी जनता का लहू पीने में जुटी है, लेकिन जनता संघर्ष करने की बजाय बाबों की शरण में जाना ज़्यादा पसंद करती है, क्योंकि यह आसान भी है, लाभ मिले या न मिले, यह तो 'भगवान' की मर्ज़ी है।

- विशेष प्रतिनिधि